

## अयोध्या जनपद के मसौधा विकासखण्ड में जनसंख्या वितरण प्रतिरूप की दशकीय गत्यात्मकता का एक भौगोलिक विश्लेषण 1991–2011

डॉ. अनुपमा सिंह

सहायक आचार्य, भूगोल विभाग, का. सु. साकेत स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अयोध्या



**Received** 10 September 2026

**Accepted** 05 October 2026

**Published** 27 October 2026

**Corresponding Author:**

डॉ. अनुपमा सिंह

**DOI:** <https://doi.org/10.64880/pcjaict.v1i6.17>

**Funding:** This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sector.

**Copyright:** © 2026 The Author(s).



This is an open access article under the [Creative Commons Attribution-Noncommercial 4.0 International License](https://creativecommons.org/licenses/by-nc/4.0/).

OPEN ACCESS

### सारांश:

प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य उत्तर प्रदेश के अयोध्या जनपद स्थित मसौधा विकासखण्ड में वर्ष 1991 से 2011 के मध्य जनसंख्या वितरण प्रतिरूप की दशकीय गत्यात्मकता का भौगोलिक विश्लेषण करना है। अध्ययन में जनसंख्या वृद्धि, जनसंख्या घनत्व, स्थानिक असमानताओं तथा ग्रामीण-नगरीय संरचना में हुए परिवर्तनों का परीक्षण किया गया है। यह अध्ययन द्वितीयक आँकड़ों पर आधारित है, जिनके प्रमुख स्रोत भारत की जनगणना 1991, 2001 एवं 2011 तथा संबंधित जिला जनगणना पुस्तिकाएँ हैं। विश्लेषण हेतु तुलनात्मक, वर्णनात्मक एवं सांख्यिकीय विधियों का उपयोग किया गया है। अध्ययन के निष्कर्ष दर्शाते हैं कि मसौधा विकासखण्ड की जनसंख्या वर्ष 1991 में 1,52,852 से बढ़कर 2011 में 2,33,169 हो गई, जबकि जनसंख्या घनत्व 757 से बढ़कर 1,154 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर हो गया। जनसंख्या वितरण में क्षेत्रीय विषमताएँ स्पष्ट रूप से परिलक्षित हुईं। उपजाऊ कृषि भूमि, सिंचाई सुविधाएँ, परिवहन संपर्क, औद्योगिक गतिविधियाँ, रोजगार के अवसर तथा अयोध्या नगर की निकटता जनसंख्या संकेंद्रण के प्रमुख कारक पाए गए। इसके विपरीत सीमित संसाधनों वाले क्षेत्रों में जनसंख्या घनत्व अपेक्षाकृत कम रहा। अध्ययन निष्कर्षतः संतुलित क्षेत्रीय विकास, आधारभूत सुविधाओं के विस्तार, संसाधनों के समुचित प्रबंधन तथा नियोजित नगरीकरण की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

**प्रमुख शब्द:** जनसंख्या वितरण, दशकीय गत्यात्मकता, जनसंख्या घनत्व, स्थानिक असमानता, ग्रामीण-नगरीय संरचना, जनसांख्यिकीय परिवर्तन, क्षेत्रीय विकास।

### प्रस्तावना-

प्रस्तुत शोध लेख में मसौधा विकासखण्ड के जनसंख्या वितरण प्रतिरूप में हुए दशकीय परिवर्तनों का भौगोलिक विश्लेषण किया गया है। यह अध्ययन 1991, 2001 और 2011 की जनगणनाओं के आँकड़ों पर आधारित है। जनसंख्या घनत्व, वृद्धि दर, ग्रामीण-नगरीय संरचना तथा स्थानिक वितरण की प्रवृत्तियों का तुलनात्मक परीक्षण किया गया है। मसौधा

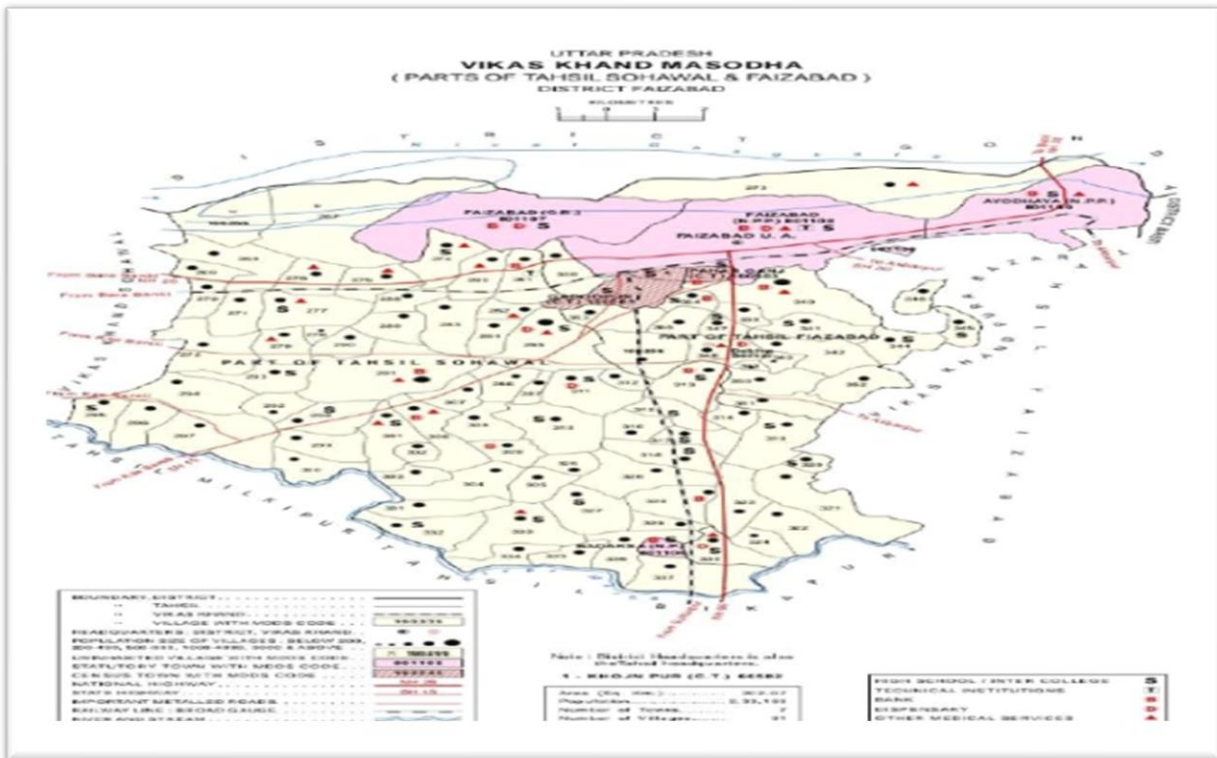
विकासखण्ड, अयोध्या जनपद का मध्यवर्ती क्षेत्र है। जहाँ कृषि, परिवहन, नगरीकरण और सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन ने जनसंख्या वितरण को गहराई से प्रभावित किया है। अध्ययन में पाया गया कि जहाँ भूमि उपजाऊ, रोजगार के अवसर प्रचुर और संचार सुविधाएँ विकसित हैं, वहाँ जनसंख्या घनत्व अधिक है, जबकि सीमित संसाधनों वाले क्षेत्रों में यह अपेक्षाकृत कम पाया गया है। 1991 से 2011 तक जनसंख्या का दबाव लगातार बढ़ा है, जिसके परिणामस्वरूप

ग्रामीण बसावटों में घनत्व और असमानता दोनों में वृद्धि हुई है। समग्र रूप से यह अध्ययन दर्शाता है कि मसौधा विकासखण्ड का जनसंख्या वितरण एक गतिशील प्रक्रिया है, जो भौगोलिक, आर्थिक और सामाजिक कारकों के संयुक्त प्रभाव से निरंतर परिवर्तित होती रही है।

**प्रमुख शब्द**—जनसंख्या वितरण, दशकीय परिवर्तन, जनसंख्या घनत्व, स्थानिक प्रतिरूप, भौगोलिक विश्लेषण, ग्रामीण-नगरीय संरचना, आर्थिक अवसर।  
**भूमिका**—

जनसंख्या वितरण किसी भी क्षेत्र की सामाजिक, आर्थिक और भौगोलिक स्थिति का सजीव प्रतिबिंब होता है। यह न केवल मानव संसाधनों के स्थानिक संगठन को दर्शाता है, बल्कि क्षेत्रीय विकास और संसाधन-उपयोग की दिशा को भी प्रकट करता है। मसौधा विकासखण्ड, अयोध्या जनपद का एक महत्वपूर्ण भाग है, जहाँ 1991 से 2011 के बीच जनसंख्या वितरण में उल्लेखनीय परिवर्तन हुए हैं।

इस अध्ययन का उद्देश्य मसौधा विकासखण्ड में जनसंख्या वितरण के दशकीय परिवर्तन को समझना और इसके पीछे कार्यरत भौगोलिक, आर्थिक एवं सामाजिक कारकों की पहचान करना है। भौगोलिक रूप से मसौधा विकासखण्ड उपजाऊ मैदान, धनी बसावट और सुलभ संचार सुविधाओं के कारण जनसंख्या घनत्व की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण क्षेत्र है। यही कारण है कि यह अध्ययन न केवल जनसंख्या परिवर्तन को समझने में सहायक है, बल्कि भविष्य की क्षेत्रीय योजना के लिए भी उपयोगी सिद्ध होता है।



### अध्ययन क्षेत्र का विवरण—

मसौधा विकासखण्ड अयोध्या जनपद के मध्य भाग में अवस्थित है, जो लगभग 26°32' उत्तरी अक्षांश तथा 82°10' पूर्वी देशांतर के मध्य फैला हुआ है। इसका कुल क्षेत्रफल लगभग 212 वर्ग किलोमीटर है। इसके उत्तर में सोहावल, दक्षिण में मिल्कीपुर, पूर्व में अमानीगंज तथा पश्चिम में रुदौली विकासखण्ड स्थित हैं। यह भौगोलिक रूप से जनपद के केंद्र में स्थित एक घनी आबादी वाला क्षेत्र है, जो अयोध्या नगर से सड़क मार्ग द्वारा प्रत्यक्ष रूप से जुड़ा हुआ है। स्थलाकृति समतल है, जिसकी ऊँचाई समुद्र तल से लगभग 95 से 110 मीटर के बीच है। जलवायु उष्णकटिबंधीय मानसूनी प्रकार की है, जहाँ औसत वार्षिक वर्षा 950–1,000 मिमी तक प्राप्त होती है। मृदा दोमट और बलुई दोमट प्रकार की है, जो कृषि के लिए अत्यंत उपजाऊ मानी जाती है। धान, गेहूं, गन्ना और दलहन यहाँ की प्रमुख फसलें हैं। सिंचाई के प्रमुख स्रोत सरयू नहर प्रणाली, नलकूप और तालाब हैं। प्रशासनिक दृष्टि से मसौधा अयोध्या जनपद

के 11 विकासखण्डों में से एक है। अयोध्या नगर की निकटता के कारण यहाँ नगरीय प्रभाव तीव्र गति से बढ़ रहा है, जिससे कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था अब वाणिज्यिक स्वरूप ग्रहण कर रही है।

### उद्देश्य एवं कार्य-विधि—

अध्ययन के तीन प्रमुख उद्देश्य निर्धारित किए गए—

1. 1991, 2001 और 2011 की जनगणनाओं के आधार पर मसौदा विकासखण्ड में जनसंख्या वितरण के दशकीय परिवर्तन का तुलनात्मक विश्लेषण करना।
2. जनसंख्या घनत्व, वृद्धि दर और ग्रामीण-नगरीय संरचना में हुए परिवर्तनों के भौगोलिक कारणों को समझना।
3. स्थानिक प्रतिरूपों के आधार पर क्षेत्रीय असमानताओं और विकास की प्रवृत्तियों का मूल्यांकन करना।

इस अध्ययन के लिए भारत सरकार की जनगणना रिपोर्टें (1991, 2001, 2011), District Census Handbook (Faizabad/Ayodhya), Ayodhya Master Plan-2031 तथा District Statistical Handbook – Ayodhya (2019) को आधार बनाया गया है। आँकड़ों के विश्लेषण हेतु प्रतिशत परिवर्तन, जनसंख्या घनत्व और ग्रामीण-नगरीय अनुपात जैसे सांख्यिकीय मानकों का प्रयोग किया गया है।

### तालिका – मसौदा विकासखण्ड का दशकीय जनसंख्या एवं घनत्व परिवर्तन (1991-2011)

| वर्ष | कुल जनसंख्या | क्षेत्रफल(वर्ग किमी.) | जनसंख्या घनत्व<br>(व्यक्ति प्रति किमी.) | दशकीय वृद्धि दर |
|------|--------------|-----------------------|-----------------------------------------|-----------------|
| 1991 | 1,52,852     | 202.07                | 757                                     | -               |
| 2001 | 1,89,536     | 202.07                | 938                                     | 24.0            |
| 2011 | 2,33,169     | 202.07                | 1154                                    | 23.0            |

जनसंख्या गत्यात्मकता के कारक

मसौदा विकास खंड में 1991-2011 के बीच जनसंख्या की तीव्र वृद्धि और गतिशीलता के लिए निम्नलिखित भौतिक, आर्थिक और सामाजिक भूगोल के कारक उत्तरदायी रहे हैं:

#### समतल जलोढ़ मैदान

यह क्षेत्र उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी से समृद्ध है। समतल भूमि के कारण यहाँ कृषि कार्य बेहद आसान है। साथ ही, मैदानी भाग होने की वजह से मकानों, सड़कों और बुनियादी ढांचे का निर्माण कम लागत में तेजी से हुआ, जिसने आबादी को यहाँ बसने के लिए आकर्षित किया।

#### सरयू नदी बेसिन

सरयू नदी की निकटता के कारण इस क्षेत्र में जल की प्रचुर उपलब्धता रही है। सिंचाई के लिए पर्याप्त पानी मिलने से कृषि उत्पादकता में भारी वृद्धि हुई। भूमिगत जल स्तर बेहतर होने से पीने और घरेलू उपयोग के लिए पानी की कोई कमी नहीं रही, जो घनी आबादी के विकास का मुख्य आधार बनी।

#### अनुकूल जलवायु

यहाँ की मानसूनी जलवायु न तो अत्यधिक गर्म है और न ही अत्यधिक ठंडी। यह मौसम मानव निवास और फसलों (विशेषकर गन्ना और धान) के चक्र के लिए एकदम उपयुक्त है। सुखद और रहने योग्य जलवायु के कारण आसपास के क्षेत्रों से लोगों का पलायन इस ओर बढ़ा।

## मसोधा चीनी मिल

इस चीनी मिल ने क्षेत्र में औद्योगिक क्रांति की नींव रखी। इसने न केवल हजारों स्थानीय लोगों और प्रवासियों को प्रत्यक्ष रोजगार दिया, बल्कि किसानों को नकदी फसल (गन्ना) उगाने के लिए प्रेरित किया। आर्थिक समृद्धि आने से इस क्षेत्र में श्रम गतिशीलता (Labor Mobility) तेजी से बढ़ी।

## रियल एस्टेट

1991 से 2011 के बीच इस क्षेत्र में जमीनों की मांग और कीमतों में भारी उछाल आया। आवासीय कॉलोनिजों और व्यावसायिक परिसरों के निर्माण ने निर्माण क्षेत्र में बड़े पैमाने पर रोजगार पैदा किया। संपत्ति में निवेश के उद्देश्य से बाहरी लोगों ने यहाँ जमीनें खरीदीं और बसना शुरू किया।

## व्यावसायिक केंद्र की निकटता

मुख्य व्यावसायिक केंद्रों और बड़े शहरों (जैसे अयोध्या/फैजाबाद) के करीब होने के कारण यहाँ व्यापार करना आसान रहा। बेहतर परिवहन संपर्क ने स्थानीय उत्पादों के विपणन को बढ़ावा दिया, जिससे मसोधा एक प्रमुख आर्थिक केंद्र के रूप में उभरा।

## उच्च शिक्षा केंद्र

इस अवधि के दौरान क्षेत्र और इसके आसपास प्रतिष्ठित शैक्षणिक संस्थानों और कॉलेजों का विकास हुआ। उच्च शिक्षा और बेहतर भविष्य की तलाश में ग्रामीण क्षेत्रों के छात्र और उनके परिवार यहाँ आकर बस गए, जिससे जनसांख्यिकीय संरचना में बड़ा बदलाव आया।

## नगरीय सुविधाओं की उपलब्धता

मसोधा में स्वास्थ्य सेवाएं, बिजली-पानी की नियमित आपूर्ति, पक्की सड़कें और बैंकिंग जैसी आधुनिक नागरिक सुविधाएं तेजी से विकसित हुईं। ग्रामीण इलाकों की तुलना में बेहतर जीवन स्तर मिलने के कारण ग्रामीण-से-शहरी प्रवासन (Rural-to-Urban Migration) को बल मिला। [1]

## उपनगरीकरण और पुश-पुल प्रभाव

इस अवधि के दौरान मुख्य नगर में जनसंख्या का दबाव अत्यधिक बढ़ चुका था, जिससे वहाँ भूमि की कीमतें बहुत अधिक हो गईं। इसके परिणामस्वरूप, एक 'पुश फैक्टर' (Push Factor) ने काम किया जिसने लोगों को शहर से बाहर कदम रखने पर मजबूर किया। दूसरी ओर, मसोधा विकास खंड अपेक्षाकृत सस्ती भूमि और शहर से नजदीकी के कारण 'पुल फैक्टर' (Pull Factor) का कार्य कर रहा था।

## ग्रामीण-नगरीय प्रवास

मसोधा में पड़ोसी जनपदों (जैसे सुल्तानपुर, आम्बेडकरनगर, बस्ती और गोंडा) से आने वाले प्रवासियों की संख्या 1991 से 2011 के बीच काफी अधिक रही। इसके अलावा, मसोधा के आंतरिक गाँवों के लोग शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं के लिए मसोधा कस्बे या राष्ट्रीय राजमार्ग के किनारे आकर बस गए।

## औद्योगिक और व्यावसायिक आकर्षण

मसोधा चीनी मिल (Masodha Sugar Mill) इस क्षेत्र का एक प्रमुख आर्थिक केंद्र रही है। इसके कारण यहाँ श्रमिकों, व्यापारियों और परिवहन कर्मियों का एक बड़ा जनसांख्यिकीय जमावड़ा हुआ। राजमार्गों के किनारे व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के खुलने से गैर-कृषि रोजगार (Non-Agricultural Employment) के अवसर बढ़े, जिसने कार्यशील जनसंख्या (Working Population) को आकर्षित किया।

जनसांख्यिकीय संरचना: 1991-2011

जनसंख्या की गत्यात्मकता का प्रभाव यहाँ की सामाजिक-आर्थिक संरचना पर स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

लिंगानुपात

\* 1991: मसोधा विकास खंड का लिंगानुपात वर्ष 1991 में लगभग 932 था।

\* 2001: यह मामूली सुधार के साथ 938 हुआ।

\* 2011: जनगणना 2011 के अनुसार यह बढ़कर 944 महिलाएँ प्रति 1000 पुरुष दर्ज किया गया।

\* भौगोलिक कारक: शहरी सीमांत क्षेत्रों में कामकाजी पुरुषों के एकल प्रवास (Single Migration) के कारण लिंगानुपात में उतनी तीव्र वृद्धि नहीं हुई जितनी शुद्ध ग्रामीण क्षेत्रों में देखी गई। [5]

साक्षरता दर में प्रगति

1991 से 2011 के बीच मसोधा विकास खंड में साक्षरता के स्तर में उल्लेखनीय सुधार हुआ:

\* 1991: कुल साक्षरता दर मात्र 44.5% के आसपास थी।

\* 2001: यह बढ़कर 55.2% हुई।

\* 2011: 2011 की जनगणना में यह आंकड़ा 66.4% तक पहुंच गया। इसमें पुरुषों की साक्षरता दर (लगभग 76.2%) महिलाओं (लगभग 56.1%) की तुलना में अधिक रही, लेकिन दो दशकों में महिला साक्षरता की विकास दर तीव्र थी।

व्यावसायिक संरचना में बदलाव

क्षेत्र में एक बड़ा जनसांख्यिकीय बदलाव प्राथमिक क्षेत्र (Primary Sector) से द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्र (Secondary and Tertiary Sectors) की ओर झुकाव के रूप में दिखा। 1991 में जहाँ लगभग 72% आबादी कृषक या कृषि मजदूर थी, वहीं 2011 तक आते-आते मुख्य और सीमांत श्रमिकों का एक बड़ा हिस्सा (लगभग 42%) निर्माण कार्य, व्यापार, परिवहन और सेवा क्षेत्र में संलग्न हो चुका था।

जनसांख्यिकीय दबाव से उत्पन्न भौगोलिक चुनौतियाँ (1991-2011 के साक्ष्य)

मसोधा विकास खंड की इस बीस वर्षीय तीव्र और अनियोजित जनसंख्या वृद्धि ने इस क्षेत्र के भूगोल और पर्यावरण के सामने कई संकट उत्पन्न किए:

1. तीव्र भूमि उपयोग परिवर्तन (Land Use Conversion): कृषि के दृष्टिकोण से अत्यंत मूल्यवान प्रथम श्रेणी की जलोढ़ दोमट मिट्टी कंक्रीट के ढांचों में तब्दील होने लगी। यह इस क्षेत्र के पारिस्थितिकी संतुलन के लिए पहला बड़ा झटका था।

2. भूजल स्तर पर दबाव (Pressure on Water Resources): जनसंख्या घनत्व बढ़ने और नलकूपों के अनियंत्रित उपयोग से मसोधा के शहरी सीमांत गाँवों में भूजल स्तर में गिरावट दर्ज की जाने लगी।

3. अनियोजित बसावटों का विकास: मसोधा के अर्ध-शहरी क्षेत्रों में बिना किसी मास्टर प्लान के संकरी गलियों वाले मकान बन गए, जिससे जल निकासी (Drainage System) की गंभीर समस्या उत्पन्न हुई।

### परिणाम एवं विश्लेषण

1991 से 2011 के बीच मसोधा विकासखण्ड की कुल जनसंख्या में लगभग 52 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई, जिससे घनत्व 757 से बढ़कर 1,154 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर हो गया।

(1) अधिकतम घनत्व वाले ग्राम: मसोधा, अछेडा और पिपरी में जनसंख्या घनत्व 1,600–1,800 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर पाया गया। इन ग्रामों में उपजाऊ भूमि, नहर सिंचाई, सड़क संपर्क, बाजार और शैक्षणिक संस्थान जैसी सुविधाओं की उपलब्धता ने जनसंख्या के संकेंद्रण को बढ़ाया।

(2) मध्यम घनत्व वाले ग्राम: पुरखेपुर, भौरकपुर और बखरिया में घनत्व 900–1,100 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर दर्ज किया गया। इन ग्रामों में कृषि उत्पादन मध्यम स्तर का है तथा स्थानीय अर्थव्यवस्था कृषि और सेवा क्षेत्र पर समान रूप से निर्भर है।

(3) न्यूनतम घनत्व वाले ग्राम: सरायभारी, चिरकुटी और नतौरा में घनत्व मात्र 300-400 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर पाया गया। यहाँ सीमित कृषि भूमि, कमजोर सिंचाई व्यवस्था और परिवहन की कमी प्रमुख कारण हैं।

इस प्रकार स्पष्ट है कि भौगोलिक और आर्थिक परिस्थितियाँ जहाँ अनुकूल हैं, वहाँ जनसंख्या संकेंद्रण तीव्र हुआ, जबकि सीमांत ग्रामों में संसाधनों की कमी से वृद्धि दर सीमित रही।

मसौदा विकासखण्ड में जनसंख्या वितरण को प्रभावित करने वाले कारक बहुआयामी हैं। भौतिक दृष्टि से उपजाऊ मृदा, समतल स्थलाकृति और नहर प्रणाली ने कृषि उत्पादन बढ़ाया।

आर्थिक रूप से अयोध्या नगर की निकटता, परिवहन व व्यापारिक संपर्क और सेवा क्षेत्र का विस्तार जनसंख्या वृद्धि के मुख्य प्रेरक बने। सामाजिक दृष्टि से शिक्षा, स्वास्थ्य और संचार सुविधाओं की उपलब्धता ने स्थायी बसावट को प्रोत्साहित किया, जबकि सांस्कृतिक दृष्टि से अयोध्या का धार्मिक और ऐतिहासिक प्रभाव इस क्षेत्र की सामाजिक संरचना में परिवर्तन का कारण बना। प्रवास की दृष्टि से मसौदा विकासखण्ड में आंतरिक प्रवासन की प्रवृत्ति स्पष्ट दिखाई देती है। रोजगार और बेहतर जीवन-सुविधाओं की खोज में ग्रामीण जनसंख्या का प्रवाह अर्द्धनगरीय क्षेत्रों की ओर बढ़ा, जिससे उच्च घनत्व वाले गांवों में जनसंख्या तीव्रता से बढ़ी। सीमांत क्षेत्रों में संसाधनों की कमी के कारण जनसंख्या वृद्धि दर अपेक्षाकृत धीमी रही।

### निष्कर्ष—

अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि मसौदा विकासखण्ड में 1991 से 2011 तक जनसंख्या वितरण का स्वरूप निरंतर परिवर्तनशील रहा है। घनत्व 757 से बढ़कर 1,154 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर हो गया। यह परिवर्तन केवल प्राकृतिक वृद्धि का परिणाम नहीं, बल्कि भौगोलिक अनुकूलता, आर्थिक अवसरों और नगरीकरण के प्रभाव का सम्मिलित परिणाम है। उच्च घनत्व वाले क्षेत्र अयोध्या नगर के समीप स्थित हैं, जहाँ भूमि उपजाऊ और संचार सुविधाएँ विकसित हैं। सीमांत क्षेत्रों में जलस्रोतों और आर्थिक अवसरों की कमी के कारण जनसंख्या वृद्धि सीमित रही। भविष्य में मसौदा विकासखण्ड में नगरीकरण और सेवा क्षेत्र की गतिविधियाँ और तीव्र होने की संभावना है। यदि संसाधनों का संतुलित उपयोग और ग्रामीण अवसंरचना का विकास सुनिश्चित किया जाए, तो यह क्षेत्र अयोध्या जनपद का एक सशक्त सामाजिक-आर्थिक केंद्र बन सकता है।

### सन्दर्भ—

1. Census of India (1991). District Census Handbook – Faizabad. Registrar General & Census Commissioner, New Delhi.
2. Census of India (2001). District Census Handbook – Faizabad. Directorate of Census Operations, Uttar Pradesh.
3. Census of India (2011). District Census Handbook – Faizabad (Ayodhya), Series 09, Part A & B. Government of India.
4. Government of Uttar Pradesh (2015). Ayodhya Master Plan-2031. Town and Country Planning Department, Lucknow.
5. Government of India (2021). Statistical Abstract of Uttar Pradesh. Ministry of Statistics and Programme Implementation, New Delhi.
6. Chandna, R. C. (2016). Geography of Population. Kalyani Publishers, Ludhiana.
7. Trewartha, G. T. (1969). A Geography of Population. John Wiley & Sons, New York.
8. Zelinsky, W. (1971). The Hypothesis of the Mobility Transition. Geographical Review, Vol. 61, No. 2, pp. 219–249.
9. Singh, Jagdish (2008). Bhārat Mein Janasankhyā Bhūgol. Meenakshi Prakashan, Meerut.
10. Mishra, R. P. (2014). Regional Planning and Development. Concept Publishing Company, New Delhi.
11. Hussain, Majid (2012). Population Geography. Rawat Publications, Jaipur.

12. Census of India (2001 & 2011). Primary Census Abstract (Rural/Urban). Registrar General, India.
13. District Statistical Handbook – Ayodhya (2019). Economics & Statistics Department, Government of Uttar Pradesh.
14. United Nations (2019). World Population Prospects: The 2019 Revision. Department of Economic and Social Affairs, UN, New York.
15. ICSSR (2018). Guidelines for Socio-Economic Research Reports. ICSSR Publication, New Delhi.
16. Sharma, H. N. (2017). Gramin Bhugol evam Janasankhya Vikas. National Publishing House, Delhi.
17. District Gazetteer – Faizabad (1994). Uttar Pradesh District Gazetteers, Department of Culture, Government of Uttar Pradesh.
18. World Bank (2020). Urbanization and Population Density Trends in South Asia: A Comparative Study. World Bank Group, Washington D.C.

**Disclaimer/Publisher's Note:** The views, findings, and opinions expressed in this publication are solely those of the author(s). The publisher and editorial team are not responsible for any errors, claims, or consequences arising from the use of the published content.